International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-3 May-June- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

संत काव्य की प्रासंगिकता

डॉक्टर सारिका धोंडिराम शेप

सार

वर्तमान संदर्भ में मराठी संतों ने रचनात्मक साहित्य की रचना करते समय प्रासंगिकता को सामने रखकर अपना लेखन किया हैं। कोई भी संवेदनषील रचनाकार एवं कथाकार अपने युग से विमुख नही रह सकता। प्रासंगिकता रचनाकार को उसी रंग रूप में पढने और समझने को बाध्य करती है। किसी भी रचनाकार की प्रासंगिकता उनकी रचनाओं में व्याप्त मानवीय मूल्यों और सामाजिक समस्याओं को केंद्र में रखकर तय की जाती है। मराठी संतों ने अपनी समय संवेदना को अपने ही रंग रूप मेंअपनी काव्यधारा में अभिव्यक्त किया हैं। इन संतों ने अपने काव्य एवं रचनाओं में रचनात्मक प्रासंगिकताओं को सामने रखकर घटनाओं का चित्रण किया हैं। वर्तमान संदर्भ को सामने रखकर मराठी और हिन्दी संतो ने साहित्य में अपनी स्वत्ंत्र पहचान बनाई है।

मुख्य शब्द : संत , काव्य

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का भक्तिकाल केवल साहित्य रचना की दृष्टि से ही नहीं, संपूर्ण सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण काल था। देष पर विदेषी सत्ताओं के आक्रमण होने शुरू हो गए थे। समाज भ्रमित स्थिति में जीवनयापन कर रहा था। यह काल सामंती, पूँजीपति और पुरोहितों का काल था। जनता कर्मकांड, आडंबर, अंधश्रद्धा, अज्ञान, और कुरीतियों के जाल में फंसी हुई थी। ऐसे समय में भ्रमित जनता को मार्ग दिखाने का कार्यसंतों ने किया।ऐसा माना जाता है कि संत साहित्य की रचना ईसा की बारहवीं सदी से शुरू हो गयीं ।संत परंपरा के सर्वप्रथम पथदर्शक प्रसिद्ध कवि जयदेव थे। उनसे लेकर 16वीं सदी तक साधना, वेणी,त्रिलोचन, नामदेव, रामानंद, सेना, नाई, कबीर, पीपा, रैदास, कमाल, धन्नाभगत जैसे कई संतों ने संत साहित्य को समृद्ध किया। ईधर मराठी साहित्य में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास आदि संतों की भक्तिधारा ने महाराष्ट्र के सर्वसामान्य जनजीवन को सँवारा और सुधारा। इन संतों ने भक्तिमार्ग को एक नया सार्थक नाम दिया। उन्होंने कहा ईश्वर का कोईएक रूप नहीं हैं, वह निराकार है और सारे चराचर में व्याप्त है। ईश्वर भक्ति का अर्थ सभी मनुष्यमात्र को तथा प्राणियों को भी ईष्वर स्वरूप मानकर उनकी सेवा करना हैं।

संतों ने जाति–पाँति, छुआछुत, भेदभाव, बाह्याआडंबर, अंधश्रद्धा, भ्रष्टाचार, लोभ, परनिंदा, पाखंड, अज्ञान से कोसों दूर रहने केलिए कहा हैं।मराठी और हिन्दी संतों का साहित्य वैष्णव, शैव और भक्ति संप्रदाय से प्रभावित हैं। संत ज्ञानेश्वर, संत मुक्ताई, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत रामदास, संत चोखोबा, संत कबीर, संत तुलसीदास, संत गुरूनानक, दादू, पीपा, सेना आदि संतों ने मराठी और हिन्दी काव्यात्मक काव्यधारा का निर्माण किया। इन संतों ने प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया। संत काव्य का मूल्यांकन करते हुए सुप्रसिद्ध इतिहासकार इरफान हबीब ने इस रहस्यवाद के एक 'नाटकीय पहलू' का उल्लेख किया है। वे कहते है कि, ''नामदेव, कबीर, रैदास, नानक, दादू, आदि की जातियों (रंगसाज, जुलाहा, चमार, खत्री, धुनिया) का विषेष सांकेतिक अर्थ है। ये संत उत्पीडित और दलित सामाजिक तबकों से आये थे, इनका एकेश्वरवाद समाज की निचली श्रेणियों की आवाज बनकर प्रकट हुआ था।''1कबीर के एकेश्वरवाद के संबंध में वे कहते है –''वास्तव में कबीर ऐसे एकेश्वरवाद की स्थापना करते हैं जिसमे ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण तो है परंतु सारे धार्मिक अनुष्ठानों को नकारा गया है और इस तरह वह कट्टर इस्लाम से बहुत आगे निकल गया है। कबीर के लिए ईश्वर से

एकाकार होने का अर्थ मनुष्यों का एक होना है और इसीलिए वहाँ शुद्धत्व और छुआछुत की प्रथा को संपूर्ण रूप से स्पष्ट शब्दों में नकारा गया है तथा सब तरह के अनुष्ठानों को अस्वीकार किया गया है।''2 आज के संदर्भ में कवि तथा समाज सुधारक कबीर और उनके साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार करने का मतलब है ''आज जीवन का विविध स्थितियों के बीच अपनी परंपरा और अपने अतित की प्रासंगिकता पर विचार करना और उन्हें पहचानना।''3 कबीर अपनी कृतियों के माध्यम से कई वर्षों के बाद भी भारतीय जनमानस के बीच सजीव हैं। उनके साहित्य में प्रासंगिकता का परिवेष दिखाई देता है। कबीर के साहित्य को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो कहा जा सकता है कि उनके साहित्य में क्रय विक्रय के लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता हैं। संत कबीर और संत तुकाराम के अर्थनीति विषयक विचार ही यह दिखा सकते है। संत कबीर कहते है– ''राजा दुबारा यौं फिरै, ज्यू हरिघई गाई।''4जिस प्रकार गाय हरियाली को देखकर बार –बार उसे खाने के लिए लालायित होकर वहाँ चक्कर काटती है। आज मनुष्य की अवस्था भी उस गाय की तरह हैं। कुछ लोग धन की लालसा से बार– बार राजदरबार के चक्कर काटते थे। उनकी तुलना कबीर ने हरिघई गाय के साथ की हैं। संत तुकाराम कहते है कि –

''जोडोनिया धन उत्तम वेव्हारें। बेंच करी।।

उत्तमचि गति तो एक पावेल।

उत्तम भोगील जीव खाणी।।''5

संत तुकाराम स्वयं धन को अपवित्र, मिट्टी के समान, विष समान, गोमांस समान, पत्थर समान मानते थे। प्रासंगिकता को सामने रखकर संत कबीर और संत तुकाराम ने काव्य का निर्माण किया जो इस युग में भी उतना ही सार्थक प्रतित होता हैं। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं का भी आकलन किया हैं। महाराष्ट्र के लार्ड ऑफ विठोबा के भक्ति संप्रदाय में संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत तुकाराम, संत चोखोबा, संत मुक्ताई, संत एकनाथ का नाम लिया जाता हैं। मराठी संतों ने प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया हैं। इसीलिए यह अनुसंधान महत्वपूर्ण हैं। भारत एकात्मकता एवं धर्मनिरपेक्षता अंगीकार करनेवाला देश है। यहाँ पर विभिन्न धर्म, संप्रदाय के लोग रहते हैं। इसीलिए भारतीय संस्कृति बेजोड हैं। प्राचीन समय से ही भारत पर विदेशी सत्ताओं के अनेक आक्रमण हुए है जिसके परिणमस्वरूप भारत में अराजकता, अनैतिकता, आंतरिक कलह की स्थिति उत्पन्न हुई। जिसका परिणाम भारतवासियों पर हुआ। ऐसी विपरीत स्थिति में भारतवासियों ने धर्म की शरण ली। उस समय भारत में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव था। लोगों को बलात् मुसलमान बनाया जा रहा था। देश का वातावरण अराजकतापूर्ण था, इसी वजह से लोग धर्म की शरण में जा रहे थे ।

सिद्ध संप्रदाय अपनी शक्तियों का गलत इस्तेमाल कर रहा था। ऐसे समय में गोरखनाथ ने नाथ संप्रदाय का निर्माण किया। इधर बौद्ध धर्म पतन की और जा रहा था, जैन और शैव धर्म का उदय हो रहा था।धर्म को लेकर भारतीय जनता भ्रमित स्थिति में थी। ऐसे समय संत महात्माओं ने समाज के पथ प्रदर्शक का कार्य कियझं भारतसंतों की भूमि है। सत्यम् , षिवम, सुंदरम् का तत्व संत कवियों के विचारों का आधार था। भक्तिसूत्रों , भागवत धर्म एवं धार्मिक मूल्यों की स्थापना और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए संतो ने कार्य किया। संत षब्द षांत का अपभ्रंश हो सकता है। एक मत यह भी है कि संत सत् का बहुवचन है। जिस साधक को सत् की अनुभूति हो चुकी हो वह संत होता है। चौदहवीं सदी के अंत में 'संत' शब्द का प्रयोग विठ्ठल अथवा वारकरी संप्रदाय के अनुयायियों के लिए होता था। आगे चलकर वह हिंदी में कबीर आदि निर्गुणियों के लिए होने लगा।डॉ धीरेंद्र वर्मा ने संत शब्द के संदर्भ में कहा है , ''संतषब्द का व्यवहार केवल उन आदर्ष महापुरूषों के लिए किया जा सकता है, जो पूर्णतः आत्मनिष्ठ होने के अतिरिक्त समाज में रहते हुए निस्वार्थ भाव से विश्व कल्याण में प्रवृत्त रहा करते है।''6 संतों और कवियों ने मध्ययुगीन काल में अराजकता, अनैतिकता, धर्मांधता, अंधश्रृद्धा जैसी सामाजिक विकृतियों का खंडन–मंडन किया हैं। वे समाज के पथप्रदर्षक रहे है। अधिकांषतः संत, कवि निम्नवर्ग के

थे और वे मानवता के सच्चे पुजारी थे। संत, कवियों के साहित्य ने तत्कालिन समाज, धर्म और देशकाल का सामाजिक यथार्थ दर्शन चित्रित किया हैं। वे निस्वार्थ भाव से विश्व कल्याण में प्रवृत्त रहे हैं। संत कवियों ने भक्ति साहित्य का निर्माण किया हैं। संत कवियों के साहित्य को किसी समय, स्थान या किसी परिधि में नहीं बांधा जा सकता। वे जिस परिवेश में जनम लेते हैं, पलते है; वे उस समय के तद्‌युगीन वातावरण से अछूते नहीं रहते है। वे उससे प्रभावित होते हैं। संत लोग न तो दार्शनिक थे, न उन्होंने इसके लिए दावा ही किया हैं। वे लोग धार्मिक व्यक्ति एवं साधक थे। प्रासंगिकता यह संत साहित्य का केंद्र बिंदु रहा हैं। यह आज के युग में अनमोल हैं। संत, कवि सत्यवादी, सदाचारी, विवेकशील, सारग्राही, समग्र चिंतक एवं योगी के रूप में प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। संत मानवता के पूजारी होते है इसमे कोई संदेह नहीं हैं।

संत साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता –

भक्ति साहित्य की विषेषता ही यह है कि यह साहित्य निर्भिकता का सच्चा पाठ पढाता है। भक्ति साहित्य में बार–बार अनुभव की बात कही जाती है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म बोध का ज्ञान ।भव का अर्थ संसार है। संसार संबंधी अपने सूक्ष्मातिसूक्ष्म बोध को भक्तगण अनुभव करते हैं। मराठी संतो ने यह कार्य किया हैं। संत तुकाराम ने बाल्यावस्था में ही उत्तम व्यवहार कर धन कमाने का और उदात्त वृत्ति से खर्च करने का उत्तम आदर्श लोगों के सामने प्रस्तुत किया था। डॉ आ ह सालुंखे के अनुसार ''सर्व सामान्य का शोषण करने के लिए साहुकारी जैसा महत्वपूर्ण साधन उनके पास था वह उन्होंने अपने हाथों से नदी में डूबो दिया और सांसारिक लोगों के सामने अपने आचरण के द्वारा एक नया आदर्श प्रस्तुत किया।''अपने समस्त जीवन व्यवहार द्वारा उन्होंने यह सिद्ध किया कि संसार के लिए सम्पत्ति अनिवार्य हैं। संचित धन का विनियोग अच्छा करना चाहिए। ऐसा संत तुकाराम का कहना था। महाराष्ट्र संतो की भूमी हैं। यहाँ भक्ति की एक दीर्घ परंपरा रही हैं। संपूर्ण देष में महाराष्ट्र को भक्ति का अनमोल स्थान मिला हैं। वारकरी संप्रदाय के संत ज्ञानेश्वर की संत परंपरा को संत नामदेव ने आगे बढाया। उन्हें हिन्दी के संत साहित्य का प्रवर्तक माना जाता हैं। विठोबा के सभी संत, भक्त थे। संत नामदेव और संत तुकाराम ने हिन्दी भाषा में भी लेखन किया हैं। वे कहते हैं –''मन मेरी सुई, तन मेरा धागा।

खेचरजी के चरण पर नामा शिंपी लागा।'' भक्ति में लीन होने के बाद संत नामदेव ने अपनी रचनाएं लिखी।संत नामदेव कहते है कि – 'काहे कूं कीजै ध्यान जपना। जो मन नाही सुध अपना। साँप कांचली छाडे विष नाहीं छाडे।'' उदिक में बग ध्यान माडे।''

सामाजिक विषमता तथा धार्मिक आडंबरों का विरोध संत नामदेव ने किया और हिन्दी साहित्य में लेखन किया। वे कहते हैं–संत एकनाथ की लिखी गोळण अर्थात् राधा कृष्ण की रासलीलाके पद आज भी विशेष प्रसिद्ध हैं।समर्थ रामदास ने दासबोध और मनाचे श्लोक का प्रासंगिकता को सामने रखकर विवेचन किया है। संत तुकाराम को मराठी सारस्वत में कबीर कहाँ जाता है। तुकाराम की अभंग गाथा में अनेक हिंदी पद पाए जाते हैं। उदा –

''राम कहो जीवन कल सोही।

हरि भजसु विलंब पाई ।''

''कहाँ से लाऊ मधूरा बानी। रीझे ऐसी लोक बिरानी।''

तुकाराम कहते है पांडुरंग, नामदेव के स्वप्न में आए और उन्होंने नामदेव से कविता करने का आग्रह किया। नामदेव, तुकाराम के स्वप्न में आए और उन्होंने अपना अधूरा कार्य पूरा करने के लिए तुकाराम से कहा।''कविता करो वाणी व्यर्थ न करो।

शब्दों में कविता किए चलो।''

विठोबा सदा तुम्हारे वाणी में प्रेम प्रसाद स्फुर्ति भरते रहे।ऐसा तुकाराम को कहाँ गया। संत तुकारामने लोक साहित्य द्वारा लोगों से संवाद किया और प्रासंगिकता को सामने रखा। संत नामदेव और संत तुकाराम हिन्दी से इसी समय परिचित हुए। हिन्दी काव्यधारा और साहित्य में मराठी संतो का योगदान उल्लेखनीय है। मेरी दृष्टि से सच्चे संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत बहिनाबाई, संत चोखोबा, संत जनाबाई, संत एकनाथ, संत गाडगेबाबा, संत तुकाराम महाराज हैं। इन संतो ने विकृति के बाजार में संस्कृति का शंखनाद किया हैं। मराठी और हिन्दी संत कवियों ने मानव की एकता एवं मानव मात्र की चिंता को लेकर साहित्य लिखा। इसीलिए यह साहित्य हर युग में प्रासंगिक हैं।हमारे देष की अनेक भाषाओं में संत साहित्य की समृद्धशाली परंपरा रही हैं। हिन्दी संत साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता – मध्ययुगीन भारत की संपूर्ण चेतना को मार्मिक काव्य की वाणी में अभिव्यक्ति देने वाली भारतीय संस्कृति के महानायक गोस्वामी तुलसीदास थे। भारत के सबसे बडे लोकनायक कहे जाते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया हैं। उनका 'रामचरितमानस' महत्वपूर्ण माना जाता हैं। तुलसीदास कहते है ''कीरति भनिती भूति भलि सोई।

सुरसरि सम सब कहुँ हित होई।।''

कीर्ति और ऐश्वर्य की भाँति कविता भी वहीं अच्छी लगती हैं। जिससे गंगा की भाँति सबकी भलाई हो, जो सबके लिए कल्याणकारी हो। तुलसीदास ने रचनात्मक प्रासंगिकता को ध्यान में रखकर लेखन किया हैं। मध्ययुगीन हिन्दी संत कवियों में युगजीवन का स्पंदन ध्वनित होता हैं। भक्ति युगीन साहित्य का उदय हिन्दी साहित्य में हुआ। कबीर का समस्त साहित्य ऐसे संदर्भों और प्रसंगों से भरा हुआ हैं। जिनका संबंध हमारे वर्तमान जीवन से हैं।

कबीर ने ऐसे साधु संतों पर व्यंग करते हुए कहा है –

बिंदु राखे जो तरी ऐ भाई।

खुसरे किउ न परम गति पाई।''

आज तो ब्रह्मचर्य के नाम पर व्यभिचार फैला हुआ हैं। ढोंगी वेश में नित माला फेरने वाले और ध्यान में मग्न रहनेवाले साधू दिखाई देते हैं। इसीलिए कबीर ने कहा है –

''माला फेरत जुग गया गया न मनका फेर ।

करका मनका डारी दे मनका– मनका फेर।।'

अपने युग की सामाजिक बुराईयों तथा विसंगतियों को दूर करना ही कबीर का उद्देश्य रहा हैं। इसीलिए कबीर कहते है कि –

''जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिए ग्यान।

मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान।।''14

कबीर का विद्रोह,विद्रोह के लिए विद्रोह नही हैं बल्कि कुप्रथाओं और कुरीतियों के प्रति विद्रोह हैं। कबीर ने उस समय समाज में पनप रहे अंधविश्वास, बाह्रआडंबर, अज्ञान, जप तप, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध जैसे क्रियाकलापों की कटु निंदा की हैं जैसे

''पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पुजू पहार।

घर की चकिया कोई न पूजे, जेहि का पिसा खाय।।''

जिसकी सार्थकता आज भी हमें प्रतीत होती हैं। संत कबीर का साहित्य हमेशा से समाज का पथ प्रदर्शक रहा हैं और आगे भी रहेगा। उनके साहित्य की प्रासंगिकता कभी कम नहीं होगी। संत नामदेव के अनुसार ईश्वर एक है जो सर्वव्यापक और सर्वपूरक हैं। जिधर भी देखो वहीं दिखाई देता हैं। माया के विचित्र चित्रों से संसार मुग्ध हैं, कोई विरला ही उसे जान पाता हैं और जो देख पाता है वह ईश्वर मय हो जाता हैं। नामदेव कहते हैं –

''अंबरीष को दियो अभय पद, राज विभीषण अधिक करयो। ध्रुव जो अटल अजहुं न टरयो। भगत हेत मारयो हरिना कुस, नृसिंह रूप है देह धरयो। नामा कहे भगति बस केसव, अजहुं बि के द्वार खरयो।'

प्रस्तुत पद संत नामदेव का है। यह पद ऐसे समय में लिखा गया जब हिन्दी साहित्य संसार में न तुलसी का अविर्भाव हुआ था न ही सूर का। संत कवियों का आदर्श और उनकी रचनाओं का उद्देश्य दूसरो की पीडा दूर करना और सभी समाज को सुख और मनः शांति प्रदान करना था। मानवी मूल्यों की स्थापना करना और अमीर, गरीब के बीच की दूरी दूर करना था। असमानता को दूर करना यह उद्देश्य सामने रखकर भारतीय संतों ने कार्य किया हैं लेकिन आज भी ऐसी कई ज्वलंत समस्याएं है जो भारत की बहुसंख्य जनता को सता रही हैं। उसे दूर करने के लिए संतो का संदेश आज भी प्रासंगिक हैं। मध्यकाल के संत कवियों में संत कबीर , संत गुरूनानक, संत तुलसीदास, संत दादू जैसे संत कवियों ने धर्मिक ऐक्य भाव संबंधी महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं।संत कवियों में गुरूनानक एक प्रसि़द्ध संत थे जिन्होंने हिंदु , इस्लाम और सुफी संप्रदाय के सार तत्व को अपनाकर एक नए सिक्ख धर्म की स्थापना की।

उनके धर्म में 'सर्वधर्म समभाव' सर्वश्रेष्ठ तत्व माना गया। उन्होंने कहाँ 'स्त्री से ही मनुष्य जन्म लेता है, स्त्री से विवाह होता और परिवार का निर्माण होता है। उसी से सृष्टि का क्रम चलता हैं।''गुरूनानक की स्त्री संबंधी वाणी अपने सार्वकालिक विचारों से भरे रहने के कारण आधुनिक संदर्भ में महत्वपूर्ण और प्रांसगिक हैं। संत दादू दयाल पशुपक्षियों तथा कीटानुओं तक को समानता की दृष्टि से देखते थे। संत दादू दयाल कहते हैं ''दादू सभि कीर देखिए ,कुजर कीट समान।''दादू दुबध्या दूर करि , तजि आप अभिमान '' संत दादू की काव्य रचनाओं के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि वे पूर्णता के, धार्मिक एकता के पक्षपाती थे, जो वर्तमान संदर्भ में निश्चित रूप से प्रासंगिक हैं। सूफी संतों ने भी सामाजिक प्रासंगिकताओं को सामने रखकर सामाजिक समस्याओं का चिंतन किया है। देश के सभी धर्म के संत कवियों ने देश की जनजातियों में जागरूकता लाने का प्रयास किया हैं। भारतीय संतो ने समाज और धर्म के पाखंडों एवं अन्यायों तथा अंधविश्वासों के विरूद्ध आवाज उठाई हैं। और सामाजिक मानवी चेतना निर्माण करने का उत्तरदायित्व अच्छी तरह से निभाया हैं। कबीर ने इस संदर्भ में कहा है ''पोथी पढ–पढ जग भया, भया न पंडित कोई। ढाई अक्षर प्रेम का पढे सो पंडित होई।।' भौतिक सुखों में लिप्त आज का मनुष्य इस अवस्था से संक्रमित हो रहा हैं। आज भारत देश के बहुसंख्यांक लोगों को देववाद तथा अज्ञान से मुक्ति दिलाने के लिए कबीर साहित्य की आवश्यकता हैं। संत रैदास कबीर के समसामयिक संत कवि थे। वे भी धर्मिक एकता के प्रचारक रहे हैं। मध्ययुगीन भारतीय संत, कवियों की रचनाओं ने धर्मिक सहिष्णुता, एकता का आवाहन किया हैं जो आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक हैं। अहिंसा तत्वों का सार सभी संतों के विचारों में था। जो अत्यंत प्रासंगिक है। इसमे कोई संदेह नही हैं।

निष्कर्ष :

अंततः कहां जा सकता है कि मराठी और हिन्दी संत कवियों नेअपने साहित्य के माध्यम से यह सींख दी है कि ईश्वर एक है तथा जन्म के आधार पर कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं हैं। आज के आधुनिक युग में एक प्रगत, एकात्मक और सुसंस्कृत समाज निर्माण में भारतीय संत साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा हैं। मध्ययुगीन काल में संतों ने जो लेखन किया हैं वह आज के युग की परिस्थितियों पर लागू होता हैं। जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, संत कबीर और मराठी में तुकाराम द्वारा अभिव्यक्त विचार एवं विषय आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।भारत आज भी जाति –पाँति के बंधन से मुक्त नहीं हो पाया है। इस अस्थिरता का लाभ राजनैतिक नेता अच्छी तरह उठा रहे हैं। दूसरी और सूरदास की कृष्णलीला, चाहे वह बाललीला हो, कालियामर्दन हो, माखनचोरी हो अथवा श्रृंगार का संयोग व वियोग पक्ष हो हर क्षेत्र में हृदयग्राही बन पडे हैं। साथ ही तुलसी की समन्वय साधना एवं रामराज्य की कल्पना आज भी दिवास्वप्न की तरह भाव के धरातल पर आंनदित तो करते है पर यथार्थ से बिल्कुल परे है। एक और मीरा का 'कृष्ण' विरहानुभूति का मानक बन बैठा है तथा दूसरी और रसखान का 'कृष्ण', रस की खान रहीम को लोकप्रियता उनके दोहों के कारण अधिक हुई है, क्योंकि ये सीधे चोट करते हैं। इनके दोहों में जो चमत्कार है वह पढने और सुननेवालों को बरबस अपनी और खींच लेते हैं।तुकाराम, नामदेव, एकनाथ की विट्ठल भक्ति आदि का सामान्यजन आदर के साथ स्मरण करते हैं। भक्ति की प्रासंगिकता की चमक भक्ति आंदोलन में आज भी दिखाई देती हैं। मराठी और हिन्दी संत कवियों की सामाजिक चेतना की क्रांति की प्रासंगिकता आनेवाले युगों– युगों तक बनी रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं हैं।

संदर्भ सूची –

1ण डॉ मु ब शाह – हिंदी में नवजागरण पृ 25

2ण वहीं – पृ 25

3ण डॉ सुरिंदर कौर संधू – कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, राष्ट्रवाणी सितंबर1998, पृ 8

4ण डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी – कबीर ग्रंथावली, साखी भाग 6, पृ 164

5ण श्री विनोबा रखुमाई– श्री क्षेत्र देहू तुकारामाची अभंगगाथा पृ 594

6ण डॉ धीरेंद्र वर्मा – हिन्दी साहित्यकोष भाग–1, पृ 854

7ण डॉ आ ह सालूंखें –विद्रोही तुकाराम पृ 34

8ण डॉ भारती गोरे – हिन्दी काव्यधारा को मराठी संतों की देन , राष्ट्रवाणी नवंबर– दिसंबर 2012,पृ16 वहीं– पृ 17

9ण तुकाराम दौड –लोककवि संत तुकाराम का`लोकसंवाद ,चिंतन सृजन अक्तूबर– दिसंबर 2010 पृ 97 वहीं पृ 98

10ण डॉ वीणा मनचंदा– लोकनायक तुलसी, राष्ट्रवाणी , मई–जून 2011,पृ 07

11ण डॉ सुरिंदर कौर संधू – कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, राष्ट्रवाणी सितंबर 1998, पृ 09

12ण प्रा योगेश पाटील – मध्यकालीन हिंदी संत कवियों की प्रासंगिकता, राष्ट्रवाणी जूलाई– अगस्त 2013 पृ

13ण डॉ भारती गोरे – हिन्दी काव्यधारा को मराठी संतों की देन, राष्ट्रवाणी नवंबर– दिसंबर 2012 पृ 17

14ण डॉ गुरूचरण सिंह–युग प्रवर्तक गुरूनानक और उनकी वाणी पृ 170

15ण आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– दादू ग्रंथावली, पृ 274

16ण डॉ रणजित जाधव – 21 वी सदी में हिंदी संत साहित्य की प्रासंगिकता, राष्ट्रवाणी मई–जून 2012